"चलो कुछ बात करें"

अपने पंख फैला कर उड़ने का समय आ गया है

हर बच्चे के जीवन में कुछ मौक़े ऐसे होते हैं जब उनका या उनके बारे में लिया गया फ़ैसला उनकी पूरी ज़िंदगी का नक़्शा बदल देता है।

ऐसा ही एक अवसर अब आ गया है जब बारहवीं के परिणाम आने के बाद उनको अपनी आगे की पढ़ाई के विषय चुनने हैं।

लेकिन दुर्भाग्य से आज के भारत में ना तो बच्चों के अभिवावक ना उनके टीचर इन बच्चों को इस लायक समझते हैं कि वो अपने मन से अपना आगे का रास्ता चुन सकें।

ये दुर्भाग्य है क्योंकि क़ानूनी दृष्टि से अब तो सोलह साल के बच्चे भी बालिग़ माने जाते हैं।अगर इन बच्चों को अपराध करने के लिए परिपक्व माना जाता है और वो १८ साल में अपनी सरकार चुन सकते हैं तो वो कॉलेज के लिए अपने विषय चुनने के लायक क्यों नहीं माने जाते?

ख़ैर,ये पत्रिका बच्चों के साथ उनके माता पिता, अध्यापकों और ऊपर बैठे देश के दिशा निर्माताओं को भी समर्पित है इसलिए ये सबसे अपील है की बच्चों को अपनी ज़िंदगी के कुछ फ़ैसले अब ख़ुद लेने दीजिए।

बचपन के लिए स्कूल के अध्यापकों की निगरानी में,उनके बनाए अनुशासन में रहना शायद ज़रूरी था लेकिन अब समय है जब उनको अपने सपनों की उड़ान भरने कि लिए छोड़ देना चाहिए।

ना जाने किस बच्चे की क़िस्मत उसे उन बुलंदियों तक पहुँचा दे जिसकी उसके अभिवावकों ने कभी कल्पना भी ना की हो।

दुख की बात है आज भी हमारी दक़ियानूसी सोच वही ५० साल पुरानी है।हर अभिभावक की इच्छा होती है मेरा बच्चा या तो इंजिनियर बने या डॉक्टर।दूसरी पसंद कॉमर्स।सब ठीक रहा तो वो चार्टर्ड अकाउंटेंट बन कर भारी कमाई करेगा।ये अलग बात है कि सी ए की परीक्षा में आज भी यह पहले से तय रहता है कि कितने प्रतिशत को पास किया जायेगा।मैं बहुतों को जानता हूँ जो बीस सालों तक परीक्षा देने के बाद भी सी ए नहीं बन पाए और ये हसरत लिए ही सेवा निवृत हो गए।

सबसे बड़ी समस्या है उन बच्चों की जो आर्ट्स लेना चाहते हैं।मैं दिल्ली के एक जाने माने स्कूल की एक छात्रा को जानता हूँ जिसने अपने दसवीं की परीक्षा के बाद अपनी मैथेमैटिक्स की किताब के पन्ने फाड़ कर आग में जला कर एक विडीओ बना कर सोशल मीडिया पर डाल दिया।उसका तो पता नहीं लेकिन उसकी सहेलियों को उस विडीओ को शेयर करने के लिए इतनी डाँट पड़ी कि उन्हें उसे डिलीट करना पड़ा।

आर्ट्स लेने वालों को और उनके अभिवावकों को आज भी उतनी ही हीन दृष्टि से देखा जाता है जितना आज से ५० साल पहले जबकि आज उनके लिए इतने ऑप्शन खुल गए हैं।एम बी ए, प्रशासनिक सेवा,अध्यापन,सेना जैसे रास्ते तो पहले भी थे जहाँ पैसा और इज़्ज़त दोनों मिलते हैं।अब तो मीडिया,ऐनिमेशन,सोशल वर्क,कम्प्यूटर,स्पोर्ट्स जैसे ऑप्शन भी दरवाज़े खोल कर खड़े हैं।

शायद ग़लत फ़ैसले लेने की वजह से बहुत से इंजीनियर क्रिकेट खेल रहे हैं, सिनेमा में अभिनय कर रहे हैं,डॉक्टर प्रशासनिक सेवा में उच्चतम पदों पर काम कर रहे हैं या एम बी ए लेखक बन गए हैं।

ज़्यादा ना कहते हुए सचिन तेंदुलकर का उदाहरण देना ही काफ़ी है।अगर उनके माता पिता उन पर स्कूल की पढ़ाई के समय उन्हें क्रिकेट नहीं खेलने देते तो वो आज दुनिया के समसे मशहूर और अमीर हस्तियों में नहीं होते।

बच्चों को भी समझना होगा कि मेहनत और अनुशासन हर जगह है चाहे वो क्रिकेट हो,गायन हो,अभिनय हो या लेखन।लेकिन अगर अभिवावक अगर उन्हें अपने विषय का चुनाव ख़ुद करने देंगे तो रास्ता बहुत सहज हो जाएगा।

AMITABH SRIVASTAVA